भज गोविंदम् भज गोविंदम् गोविंदम् भज मूढ़ मते

जब भक्त साथ हैं तो आसाराम का कोई क्या बिगाड़ेगा

-मनोज कुमार झा

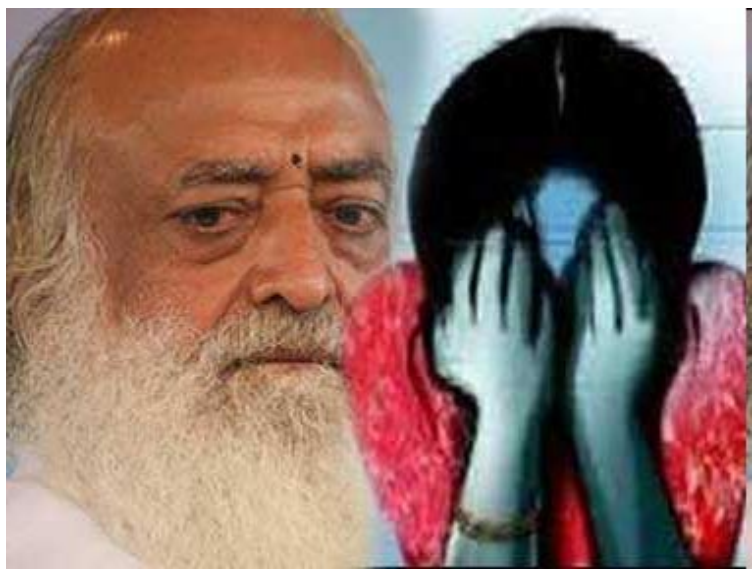

बलात्कारी 'संत' आसाराम को जेल में भी सुविधाए मिल रही हैं। इसे लेकर सवाल भी खड़े हुए, पर 'धर्मप्राण' इस देश के अफ़सर, नेता कथा बांच-बांच कर हज़ारों करोड़ का काला साम्राज्य खड़ा कर लेने वाले इस पाखंडी की सुविधा का ख्याल न करें तो उन्हें डर है कि मरने के बाद कहीं नरक में न जाना पड़े। विश्व हिंदू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंघल, निर्भीक होकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ विष-वमन करने वाले प्रवीण तोगड़िया, शांति का उद्घोष करने वाले धवल वस्त्रधारी 'खाए-पीए-अघाए' लोगों को आर्ट ऑफ लिविंग सिखाने वाले श्री श्री रविशंकर और भाजपा के कतिपय नेताओं ने खुलकर इस बलात्कारी का समर्थन किया।

पुलिस ने इसे गिरफ़्तार करने के बजाय आत्मसमर्पण करने के लिए लंबा वक्त दिया, पर जब इसने चूहे-बिल्ली का खेल जारी रखा और सोनिया-राहुल के ख़िलाफ़ बयानबाजी शुरू कर दी तो राजस्थान के कांग्रेसी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को इसे गिरफ़्तार करने का सख्त आदेश देना पड़ा। इसके बाद इसने चुनावों में अशोक गहलोत को मजा चखाने की बात भी कही। इसने कहा कि सभी पार्टियों में उनके भक्तों की अच्छी-खासी संख्या है। विधायक, सांसद, मंत्री उनके चेले हैं। आसाराम ने यह गलत नहीं कहा है।

शुरू में इसने कहा था कि उसने कांग्रेस के ख़िलाफ़ बोला था, इसलिए साजिश के तहत उसे फंसाया गया। बाद में एक के बाद एक कर सबूत आने लगे। उसके मुख्य सहयोगी शिवा की गिरफ़्तारी के बाद यह राज खुला कि बापू प्राय: महिलाओं से एकांत में मिलता था। जोधपुर आश्रम की संचालिका उसके लिये लड़कियों का इंतजाम करती थी। वह झाड़-फूंक के बहाने उन्हें एकांत में बुलाता, उन्हें नशीली दवा मिला दूध पीने को देता और फ़िर उनका यौन शोषण करता बाद में ब्लैकमेल करने के लिए उसकी सीडी भी बनाई जाती। आसाराम स्वयं गांजा, चरस और अफीम के नशे में डूबा रहता है और कामशक्ति वर्द्धक दवाओं का इस्तेमाल करता है।

शुरू में दारू का अवैध कारोबार करने वाला आसाराम जमीने हड़पने के मामले में भी अव्वल है। इसके अधिकांश आश्रम जबरन कब्जा की गई जमीन पर बने हैं। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और दिग्गज कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने करोड़ों रुपए की जमीन इसे एक रुपया सालाना लीज पर दी थी, पर इस छंटे हुए बदमाश ने वह एक रुपया भी सरकार को देना जरूरी नहीं समझा।

लोग आसाराम को संन्यासी, संत और बापू कहते हैं, पर यह एक लंपट शोहदा है। संन्यासी और संत विवाह कर घर नहीं बसाते, पर इसने विवाह कर अपना काला साम्राज्य संभालने के लिए अपने जैसे ही एक लंपट शोहदे को पैदा किया है। आसाराम और उसके बेटे का एक ही शौक है- मूढ़मति भक्तिनों और उनकी मासूम कन्याओं की अस्मत से खेलना।

कहा तो यहां तक जा रहा है कि इसके आश्रमों से लड़कियों को नेताओं और उच्च अधिकारियों की हवस की आग बुझाने के लिए भी भेजा जाता रहा है। इस अपराधी का जब नार्को टेस्ट होगा तो दिल दहला देने वाले कई राज सामने आ सकते हैं।

यहां यह सवाल उठता है कि आसाराम और इस तरह के पाखंडी कैसे अपने नापाक मंसूबों में कामयाब हो जाते हैं और किस तरह करोड़ों-करोड़ का साम्राज्य खड़ा कर लेते हैं।

यह प्रश्न विचारणीय है। जिस लड़की का आसाराम ने यौन शोषण किया, उसके माता-पिता आसाराम के भक्त थे और उन्होंने दान में उसे जमीन भी दे रखी थी। इसका मतलब है, वे अच्छी आर्थिक हैसियत वाले थे। इस तरह के न जाने कितने धनी लोग आसाराम के भक्त हैं। इनके लिए आसाराम भगवान के दूसरे रूप हैं-भगवान ही हैं। भगवान पर उंगली नहीं उठाई जा सकती। ये भी आसाराम पर उंगली नहीं उठाते।

छिंदवाड़ा आश्रम में रहने वाली बालिका के माता-पिता ने आसाराम को जेल के सींखचों के पीछे पहुंचवाया तो वे आसाराम और उस जैसे अन्य पाखंडियों की दृष्टि में धर्मविरोधी हो गये।

हिंदू धर्म में देवताओं और ऋषि-मुनियों, महंतों-मठाधीशों को बलात्कार, यौन शोषण और दूसरों की पत्नियों के साथ भोग-विलास करने की पूरी छूट है। धर्म ग्रंथों और प्राचीन महाकाव्यों में ऐसे विवरण भरे पड़े हैं। देवताओं का राजा इन्द्र बहुत बड़ा व्यभिचारी था। ऐसे भी विवरण मिलते हैं कि ऋषि-मुनियों का दिल अगर किसी सुंदरी पर आया तो उन्होंने चाहे जैसे भी हो, उसे अपनी वासना का शिकार बनाया।

ब्राह्मणों और अभ्यागतों को पत्नी अर्पित करने की परंपरा इसी 'महान्' हिंदू धर्म में रही है। तुलसीदास ने अयोध्या के मंदिरों में महंतों के व्यभिचारों के बारे में जो लिखा है, वह असत्य नहीं है। उन्हीं महंतों और उनकी रखैलों के अत्याचारों की वजह से तुलसीदास को अयोध्या छोड़ कर काशी जाना पड़ा था।

स्पष्ट है, हिंदू धर्म में सड़ांध पहले से ही रही है। आसाराम जैसे दुराचारी जो धर्म के नाम पर हर तरह के पाप करते हैं, पहले भी रहे हैं। और आगे भी रहेंगे, जब तक धर्मांध लोग इनके आगे साष्टांग दंडवत कर भरपूर चढ़ावा चढ़ाते रहेंगे। आसाराम जबरन किसी को अपना अनुयायी नहीं बनाता। लोग ही इसके पीछे भागते हैं धर्म ऐसा धंधा है, जिसमें हरड़े लगे न फिटकिरी, रंग चोखा ही आता है। इसलिए दारू का अवैध करोबार करने वाला आसाराम हरपलानी अगर बापू बनकर धर्म के धंधे में आ गया तो इसने अपने फ़ायदे का ही काम किया।

धर्म लोगों को स्पष्ट संदेश देता है-

'भज गोविंदम्, भज गोविंदम्,
गोविंदम भज मूढ़मते।'

लोगों को मूढ़ मान भगवान को भजने और धरती पर भगवान के आसाराम जैसे दल्लों को तन, मन, धन, सब कुछ समर्पित करने का संदेश देता है।

बलात्कारी 'संत' आसाराम का समर्थन भाजपा और विश्व हिंदू परिषद् के नेताओं ने तो किया ही, उसी जैसे तमाम संतों-महात्माओं और हिंदू धर्म के ध्वजा वाहक शंकराचार्य ने भी किया। योग का व्यापार कर अरबों रुपए कमाने वाले बाबा रामदेव कहते हैं कि विदेशी ताकतों के इशारे पर साधु-संतों को कुचक्र रच कर फंसाया जा रहा है। सत्ता पर अपनी नजर गड़ाये इस योग व्यापारी का कहना है कि आसाराम बापू पर बेबुनियाद आरोप मढ़कर उनकी छवि धूमिल करने का प्रयास किया गया। कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती का कहना है कि परम पूज्य बापूजी ब्रह्मस्वरूप संत हैं। उनके दर्शन मात्र से जीवन में उन्नति हो जाती है। उल्लेखनीय है कि इस शंकराचार्य पर भी यौन शोषण का आरोप लग चुका है।

एक और चमत्कारी महापुरुष हैं निरंजनी अखाड़ा के महामंडलेश्वर-बह्मर्षिकुमार स्वामीजी । ये गुरूमंत्र से कैंसर जैसी बीमारी ठीक करने के साथ ही साथ मिसाइलों के हमले को भी निष्प्रभावी करने का दावा करते हैं। इन्होंने भी घोषणा की है कि वे पूज्य आसारामजी बापू के साथ हैं। जूना अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर श्री अवधेशानंदजी ने आसाराम बापू को अध्यात्म की एक प्रेरणा ज्योति बताया है। अखिल भारतीय संत समिति के राष्ट्रीय महामंत्री महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी ने आसाराम को परम पूज्य कह उन्हें विश्व बंधुत्व और विश्वशांति का अग्रदूत बताया है।

जब इतने महान 'आध्यात्मिक' पुरुष आसाराम के साथ खड़े हैं तो आम जनता को उनकी जय-जयकार करनी ही चाहिए। और जनता जय-जयकार कर भी रही है। पूरे देश में आसाराम को निदोर्ष बताते हुए पर्चे बांटे जा रहे हैं, प्रदर्शन किए जा रहे हैं, और इन प्रदर्शनों में महिलाएं बढ़-चढ़ कर भाग ले रही हैं।

इससे वे साबित करना चाहते है कि आसाराम ने कुछ भी गलत नहीं किया। हां, उस बालिका ने आसाराम के समक्ष समर्पण न कर पाप जरूर किया, अन्यथा पवित्र हो जाती। न जाने कितनी कन्याओं और महिलाओं को आसाराम ने पवित्र किया होगा। और जेल से छूटने पर और भी कितनों का उद्धार करेगा।

इधर, यौन शोषण की शिकार बालिका कहती है कि वह आईएएस बन कर आसाराम जैसों को सबक सिखायेगी, पर उसे शायद पता नहीं कि आसाराम के सामने बड़े से बड़े अफ़सर की भी कोई औकात नहीं। जिस देश में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, वैज्ञानिक और टाटा जेसे उद्योगपति भी पाखंडी धर्म गुरूओं के आगे शीश झुकाते हैं, वहां कोई भी इनके चंगुल से बच नहीं सकता। हर ओर से सुरक्षा हासिल कर आसाराम जैसे आततायी अपनी हवस पूरी करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। और चाहे कुछ भी हो जाए, जनता इन्हें पूजे। पूज भी रही है।

'भज गोविंदम् भज गोविंदम् गोविंदम् भज मूढ़ मते।'

तुर्की-ब-तुर्की

अशोक सिंघल
अध्यक्ष वीएचपी

"संत आसाराम के विरुद्ध कार्यवाही हिन्दू संस्कृति पर हमला है।"

हमारा कहना है-

- सर्वप्रथम हम दुराचारी आसाराम के इस योगदान को स्वीकारना चाहेंगे कि उसका व्यभिचार समाज के सामने आने से सभी को यह पता लग गया कि 'हिन्दू संस्कृति' से वीएचपी का क्या तात्पर्य है। साथ यह भी कि अशोक सिंघल किस बीमार मानसिकता से ग्रस्त है।
- हम अशोक सिंघल से पूछना चाहेंगे कि क्या हिन्दू संस्कृति में आध्यात्मिक चोला पहनने से किसी को भी व्यभिचार करने का लाईसेंस मिल जाता है? या यह छूट केवल आसाराम के लिये ही है?
- दिल्ली रेप कांड (दिसम्बर 2012) में शामिल तमाम अपराधी, जिन्होंने जघन्यमत तरीके से हैवानियत की सभी हदें लांघ कर कुकृत्य किया था, भी हिन्दू थे। तो क्या उन्हें भी उस 'हिन्दू संस्कृति' का लाभ मिलना चाहिये जिसकी बात सिंघल ने की है?
- आसाराम की पीड़िता भी हिन्दू है। देश में हो रहे बहुतेरे बलात्कार कांडों की पीड़ितायें भी हिन्दू हैं। अशोक सिंघल के बताये समीकरण के मुताबिक हिन्दू स्त्रियों को अपने साथ होने वाले बलात्कारों पर चुप ही रहना चाहिये। अन्यथा हिन्दू संस्कृति पर हमला माना जायेगा क्योंकि कोई भी बलात्कारी बाज़ार से संत का चोला खरीदकर पहन सकता हैं।
- अशोक सिंघल के अलावा वीएचपी के ही प्रवीण तोगड़िया, भाजपा की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती और मध्य प्रदेश के भाजपाई मन्त्री कैलाश विजयवर्गीय भी आसाराम के समर्थन में वक्तव्य दे रहे हैं। हमारा निवेदन है कि 'हिन्दू संस्कृति' (अशोक सिंघल वाली) से परिचय कराने के लिये वे अपने घरों की महिलाओं को भी आसाराम की सेवा में भेजें। हमें उनसे भी भुक्तभोगी 'हिन्दू संस्कृति' की असलियत के बारे में जानने की प्रतीक्षा रहेगी।

मोदी, 'लौह पुरुष' और किसान

लालकृष्ण आडवाणी या फिर गुजरात के मख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी। आने वाले लोकसभा चुनाव में 'मोदी' देश के प्रधानमंत्री बनने की तैयारी कर रहे हैं और अपनी तुलना सरदार बल्लभभाई पटेल जोकि 'लौहपुरुष' थे, से तो नहीं कर रहे हैं! मोदी पार्टी के 'लौहपुरुष' जरूर हो सकते हैं। जनता के नहीं। मोदी ने सरदार बल्लभ भाई पटेल की स्मृति में 'लौहपुरुष' की प्रतिमा के निर्माण के लिए एक कार्यक्रम में देश के किसानों से लोहा इकट्ठा करने का आह्वान किया है जिससे विशाल प्रतिमा बनाई जा सके। कहने का तात्पर्य यह है कि आज तक चुनाव से पहले मोदी को कभी लौह पुरुष की याद नहीं आई।

क्या मोदी देश की जनता को बतायेंगे कि जहां के वे मुख्यमंत्री रहे हैं वहां के किसानों के लिये उन्होंने क्या किया है जो किसानों को लोहे के टुकड़े प्रतिमा के लिए इकट्ठा करने का आह्वान कर रहे हैं उससे किसानों को क्या मिलेगा? क्या कभी किसानों के बारे में सोचा है। कई दशकों से किसानों ने लाखों की संख्या में आत्महत्यायें की हैं। उनकी खाद-बीज से सब्सिडी खत्म कर दी है। उनकी जमीन को औने-पौने दामों में खरीदा जाता रहा है। इस बारे में कोई बात करेंगे नहीं? कभी बेरोज़गारी महंगाई के ख़िलाफ़ अभियान चलाया ही नहीं, इससे किसी पार्टी के नेता को कोई मतलब नहीं रहा हैं। मतलब रहा है तो येन-केन प्रकारेण सत्ता तक पहुंचना लौह प्रतिमा से किसानों की बदहाल जिन्दगी नहीं बदलेगी। देश की सत्तानसीन सत्ता से बाहर की पार्टियों ने देश की व्यवस्था का बेड़ा गर्क कर दिया। आगे बढ़कर किसानों को देश की जनता को लूट मुनाफ़े पर टिकी व्यवस्था को खत्म करने के लिये संगठित होना चाहिए।

-सूरज, रामनगर